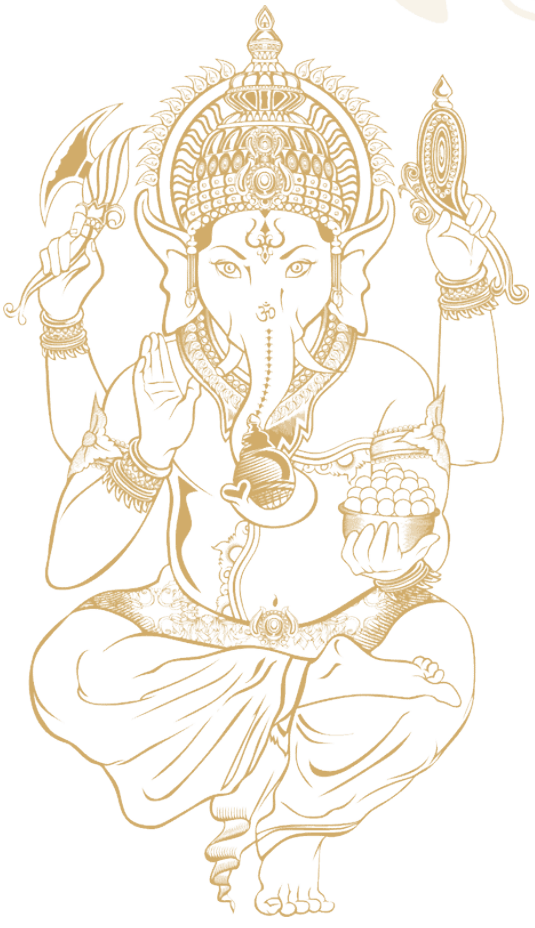

Mr.a

Ms.??

Model: Web-FreeMatching

Order No: 119232107

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
04/09/2000	जन्म तिथि	26/05/1997
सोमवार	दिन	सोमवार
घंटे 14:55:00	जन्म समय	12:15:00 घंटे
घटी 22:27:18	जन्म समय(घटी)	17:20:08 घटी
India	देश	India
Hardwar	स्थान	Muzaffarnagar
29:58:00 उत्तर	अक्षांश	29:28:00 उत्तर
78:09:00 पूर्व	रेखांश	77:42:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:17:24	स्थानिक संस्कार	-00:19:12 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
05:56:04	सूर्योदय	05:21:49
18:36:05	सूर्यास्त	19:10:56
23:51:44	चित्रपक्षीय अयनांश	23:49:12

विंशोत्तरी	अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी
शनि 18वर्ष 5मा 23दि	14:19:18	धनु	लग्न	सिंह	12:29:40	सूर्य 3वर्ष 11मा 25दि
बुध	18:17:09	सिंह	सूर्य	वृष	11:14:31	राहु
28/02/2019	03:41:49	वृश्चि	चंद्र	मक	01:08:36	21/05/2018
28/02/2036	28:08:58	कर्क	मंगल	सिंह	27:21:12	20/05/2036
बुध 26/07/2021	00:10:34	कन्या	बुध	मेष	16:22:57	राहु 31/01/2021
केतु 23/07/2022	16:20:32	वृष	गुरु	मक	27:46:30	गुरु 27/06/2023
शुक्र 23/05/2025	11:20:38	कन्या	शुक्र	वृष	25:17:03	शनि 03/05/2026
सूर्य 30/03/2026	07:03:27	वृष	शनि	मीन	22:57:54	बुध 19/11/2028
चन्द्र 29/08/2027	29:32:32	मिथु व	राहु व	कन्या	02:12:14	केतु 08/12/2029
मंगल 25/08/2028	29:32:32	धनु व	केतु व	मीन	02:12:14	शुक्र 07/12/2032
राहु 15/03/2031	24:03:28	मक व	हर्ष व	मक	14:47:02	सूर्य 01/11/2033
गुरु 20/06/2033	10:21:59	मक व	नेप व	मक	05:58:54	चन्द्र 03/05/2035
शनि 28/02/2036	16:20:52	वृश्चि	प्लूटो व	वृश्चि	10:23:14	मंगल 20/05/2036

लग्न-चलित

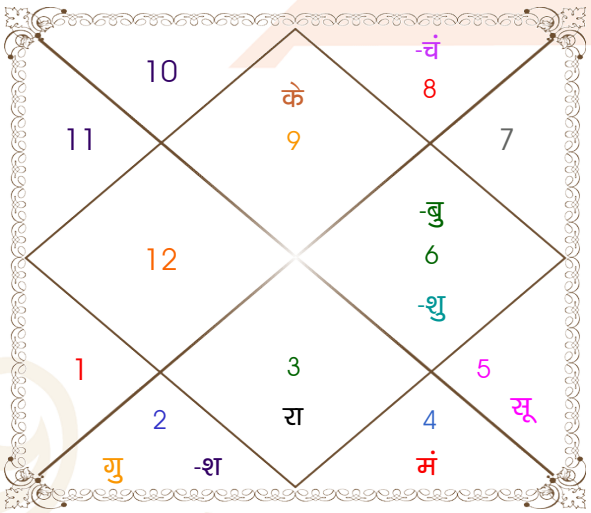

लग्न-चलित

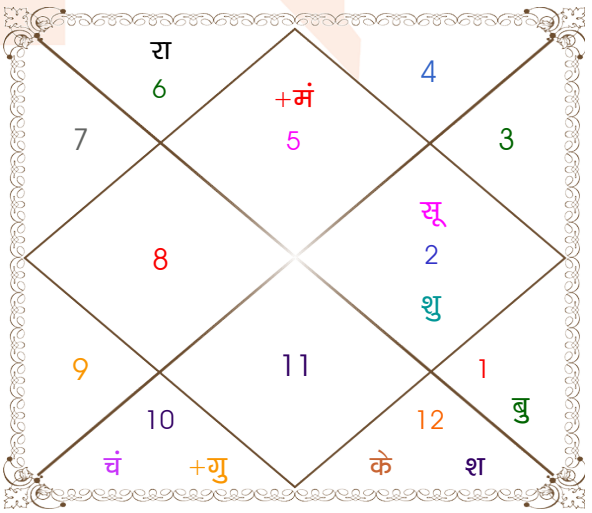

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	विप्र	वैश्य	1	1.00	--	जातीय कर्म
वश्य	कीटक	चतुष्पाद	2	1.00	--	स्वभाव
तारा	साधक	प्रत्यारि	3	1.50	--	भाग्य
योनि	मृग	नकुल	4	2.00	--	यौन विचार
मैत्री	मंगल	शनि	5	0.50	--	आपसी सम्बन्ध
गण	देव	मनुष्य	6	6.00	--	सामाजिकता
भकूट	वृश्चिक	मकर	7	7.00	--	जीवन शैली
नाड़ी	मध्य	अन्त्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	27.00		

डतणं का वर्ग सर्प है तथा डेण्घ्घ का वर्ग मूषक है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार डतणं और डेण्घ्घ का मिलान अत्युत्तम है।

मंगलीक दोष मिलान

डतणं मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में अष्टम् भाव में स्थित है।

भौमेः वक्रिणि नीचगृहे वाऽर्कस्थेऽपि वा न कुजदोषः।

अर्थात् यदि मंगल वक्री, नीच, अस्त का हो तो मंगल दोष नहीं होता है।

क्योंकि मंगल डतणं कि कुण्डली में नीच का है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

डेण्घ्घ मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में प्रथम भाव में स्थित है।

गुणबाहुल्ये भौमदोषो न विद्यते।।

यदि अधिक गुण मिलते हों तो मंगल दोष नहीं लगता।

क्योंकि अधिक गुण मिलते हैं अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

यामित्रे च यदा सौरि लग्ने वा हिबुकेऽथवा।
अष्टमे द्वादशे वापि भौमदोषविनाशकृत्।।

शनि यदि एक की कुंडली में 1,4,7,8,12 वें भावों में हो और दूसरे के मंगल इन्हीं भावों में हों तो मंगल दौष नहीं लगता।

क्योंकि शनि डेण्घ्घ कि कुण्डली में अष्टम् भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट

जाता है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि शनि डतणं कि कुण्डली में षष्ठ भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

डतणं तथा डेण्घ में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।